ऋण-निर्देश (ACKNOWLEDGEMENT)

'एकेनैव चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत् ।' अर्थात् एक ही पहिये से रथ नहीं चल सकता। इसी तरह जिन व्यक्तियों ने इस शोधकार्य में मुझे सहयोग तथा प्रोत्साहन दिया, उनके प्रति ऋण-निर्देश जताना मैं मेरा कर्तव्य मानती हूँ।

सर्वप्रथम जिन अनाकलनीय शक्तियों ने मुझे तबला वाद्य की ओर आकृष्ट कर आशीर्वाद प्रदान किया उन्हें विनम्र अभिवादन करती हूँ । जिस दिन मैंने तबला की शिक्षा का प्रारम्भ किया, उसी दिन ही मेरे दादाजी कै. विनायक घोलकर ने तबला उपहार स्वरूप देकर मुझे प्रोत्साहित किया । मेरी संगीतसाधना का निरन्तर प्रेरणास्थान है, मेरे पूजनीय पिताजी कै. अरविंद घोलकर । तबला मार्गदर्शन की उपलब्धियाँ एवं कलासाधना में सुयोग्य दिशा दिखाकर पिताजी ने मुझे सर्वांगीण सहयोग दिया और मेरे डॉक्टरेट पदवी के ध्यास में ही उन्होंने जीवन की अन्तिम साँस ली । मेरी पूजनीय माताजी श्रीमती शालन घोलकर का भी इसमें महत्त्वपूर्ण योगदान है । इनके अनुबंध में रहना मैं मेरा कर्तव्य समझती हूँ ।

पं. यशवंतराव अष्टेकर गुरूजी से दो वर्ष तबले की शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने मुझे गुरूवर्य पं. नारायण जोशी जी के पास थिरकवाँ शैली सीखने हेतु सौंप दिया । गुरूवर्य पं. नारायण जोशी जी से प्रदीर्घ शिक्षा लेने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ । उन्होंने गंडाबांध शागिर्दा बनाकर मुझे थिरकवाँ शैली की अमूल्य शास्त्रशुद्ध विद्या प्रदान की । इस वजह से मुझे प्राचीन गुरू-शिष्य परम्परा की अनुभूति हुई । सांगीतिक जीवन में गुरूजनों के इस प्रभाव के प्रति मैं शुक्रगुज़ार हूँ । तबला विषय में राष्ट्रीय सांस्कृतिक छात्रवृत्ति, सुलश्री प्रतिष्ठान छात्रवृत्ति, मानव संसाधन विकास मंत्रालय छात्रवृत्ति ऐसी कई सारी छात्रवृत्तियाँ मैंने संपादन कीं, जिनका सारा श्रेय मेरे गुरूजनों को जाता है । इन गुरुजनों के प्रति मैं विनम्र श्रध्दाभाव अभिव्यक्त करती हूँ ।

इतिहास विषय में स्नातक की पदवी लेने के बाद मैंने तबला विषय में 'संगीत विशारद' की उपाधि प्राप्त की । मेरी बहन डॉ. मंजिरी घोलकर ने मुझे अनमोल सहयोग देकर मेरा आत्मबल बढ़ाया। परिणामत: सन २०११ में तबला विषय में अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल की

‘संगीत अलंकार’ पदवी संपूर्ण भारत में प्रथम क्रमांक के साथ मुझे प्राप्त हुई एवं सन २०१३ में तबला विषय लेकर शिवाजी युनिवार्सिटी, कोल्हापूर की ‘मास्टर ऑफ परफॉर्मिंग आर्टस्’ उपाधि विशेष योग्यता से प्रथम क्रमांक के साथ मैंने ग्रहण की। इन उपाधियों का श्रेय मैं पं. आमोद दंडगे सर जी को देती हूँ, जिनका अमूल्य मार्गदर्शन मैंने पाया। उनकी पत्नी सौ. प्रिया दंडगे ने भी इसमें सहयोग दिया। इनका मैं हृदय से धन्यवाद करती हूँ।

पी. एच. डी. करने की मेरी चाह ने मुझे बडोदा की राह दिखायी और ‘द महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी, बरोडा’ से तबला विभाग में पी. एच. डी. के अन्तर्गत मेरे शोधकार्य का आरम्भ हुआ। इस शोध कार्य में मार्गदर्शक के रूप में प्रो. डॉ. अजय अष्टपुत्रे सर जी जैसे आदर्श कलाकार से ज्ञान प्राप्त करने का मौका मिला। उनका समय-समय पर दिया हुआ प्रभावशाली मार्गदर्शन, नैतिक बल एवं सकारात्मक दृष्टिकोन मुझे प्रेरणा देता रहा। उनके सहयोग से गुणिजनों के साथ प्रत्यक्ष रूप में साक्षात्कार करने का मौका मिला तथा बुजुर्गों की जीवनी के विषय में मदद मिली। उनकी पत्नी डॉ. मेघना अष्टपुत्रे ने भी स्नेहपूर्ण सहकार्य किया। इन दोनों के प्रति मैं कृतज्ञतापूर्वक आभार व्यक्त करती हूँ।

इस शोधकार्य में पं. आमोद दंडगे, पं. बापू पटवर्धन, पं. भाई गायतोंडे, पं. किरण देशपांडे, डॉ. अजय अष्टपुत्रे, डॉ. गौरांग भावसार, डॉ. केदार मुकादम, श्री. नंदकिशोर दाते, पं. हिमांशू महंत, एवं पं. सदानंद नायमपल्ली इनके साथ हुए साक्षात्कार के अवसर से ज्ञानवर्धन हुआ। इन सब विद्वज्जनों की मैं सदैव ऋणी रहूँगी। डॉ. अमित खेर जी ने शोधकार्य संबंधी जानकारी देकर सहकार्य किया एवं बंदिशों के संकलन में डॉ. अजय अष्टपुत्रे, डॉ. गौरांग भावसार, डॉ. केदार मुकादम, डॉ. चिरायू भोळे, श्री. चिराग सोलंकी, डॉ. अमित खेर एवं श्री. स्वप्निल भिसे से सहकार्य मिला। उनके प्रति आभार। इस शोधप्रबंध के लिए कई ग्रंथों की सहायता ली है, जिन ग्रंथ एवं ग्रंथकारों का नामोल्लेख संदर्भ ग्रंथ सूची में किया है। इन सभी गुणिजनों के प्रति मैं सादर आभार व्यक्त करती हूँ।

शोध-सार की संस्कृत रचना प्रा. राहुल सातघर सर ने की है। उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। शोधप्रबंध के हिन्दी लेखन शुद्धि जाँच कार्य में प्रा. डॉ. राम नेमाडे सर ने आत्मीयतापूर्वक सहयोग दिया। उनकी धर्मपत्नी सौ. कुसुम नेमाडे (माई)ने भी स्नेहपूर्ण साथ दिया। ऐसे दुर्लभ गुणी विद्वज्जनों के मार्गदर्शन से मेरा शोधप्रबंध समृद्ध हुआ। उनके प्रति कृतज्ञतापूर्वक आभार प्रदर्शित करती हूँ। शोध प्रबंध के डि.टी.पी. का क्लिष्ट काम सौ. नीलिमा मराल ने उत्कृष्ट रीति से पूर्ण किया। उनकी मैं आभारी हूँ।

फॅकल्टी ऑफ परफॉर्मिंग आर्टस् के डीन प्रो. डॉ. प्रभाकर दाभाडे एवं व्हाइस डीन प्रो. डॉ. राजेश केळकर, सभी एच. ओ. डी., प्राध्यापक, विद्यार्थी तथा ग्रंथालय एवं कार्यालयीन कर्मचारियों का शुक्रियाँ अदा करना चाहती हूँ। युनिवर्सिटी पी.एच.डी. कोर्स वर्क के सभी प्राध्यापकों के मार्गदर्शन के लिए मैं उनकी आभारी हूँ।

मेरा शोधकार्य सफलतापूर्वक संपन्न करने में मेरे पति श्री. अजित नाडकर्णी एवं मेरे सुपुत्र डॉ. नितीश नाडकर्णी दोनों का बड़ा योगदान रहा है। घरगृहस्थी की जिम्मेदारी निभाने के साथ-साथ समय-सारिणी बनाकर शोधकार्य में इन्होंने समय प्रबंधन का कार्य भी किया। दिन के हर एक क्षण नि:संकोच सहयोग एवं समर्थन देकर सर्वांगीण सहायता की, ताकि मैं शोधप्रबंध को सफलता से पूर्ण करने में अपना ध्यान पूरी तरह से केंद्रित कर सकूँ। इसके अलावा मेरे सुपुत्र डॉ. नितीश ने पग-पग पर आवश्यक सुझाव देकर स्नेहयुक्त व्यवहार द्वारा प्रबंध का सुयोग्य एवं सुचारु ढाँचा बनाने में मदद की। दोनों को प्रामाणिक धन्यवाद देने में मैं प्रसन्नता का अनुभव करती हूँ।

इस शोधकार्य में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मुझे सहयोग देनेवाले सभी गुणिजनों का मैं तहेदिल से शुक्रियाँ अदा करना चाहती हूँ। उनके प्रति मैं सदैव ऋणी रहूंगी।